I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

शिक्षण में परंपरागत विधि की प्रभावशीलता एक अध्ययन

हीना जैन [1*], डॉ. हरीश कुमार मेनारिया [2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

[2] शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, सहआचार्य, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * हीना जैन

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21643111

सारांश

यह अध्ययन **"शिक्षण में परंपरागत विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन"** पर आधारित है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से शिक्षा के क्षेत्र में नए विचार, नए कार्यक्रम, नई विधियो तथा नवीन साधनों का प्रयोग करना ही शैक्षिक नवाचार के अंतर्गत आता है। नई शिक्षा नीति 2020 देश के भौतिक, शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। समग्र और लचीली शिक्षण पद्धति पर जोर देने के साथ NEP -2020 दूरी को दूर करने, पहुंच सुनिश्चित करने और सीखने के अनुभवों की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षा के महत्व को मान्यता देती है। इस नीति में जिन प्रमुख पहलुओं पर जोर दिया गया है उनमें से एक ही मिश्रित अधिगम पद्धतियों को अपनाना। मिश्रित अधिगम जो पारंपरिक कक्षा निर्देश को ऑनलाइन तत्वों के साथ जोड़ती है तथा बहू विषयक और कौशल उन्मुख दृष्टिकोण के लिए NEP की अनुशंसाओं को संबोधित करती हैं। इस अध्ययन में प्रायोगिक अनुसंधान विधि अपनाई गई। उदयपुर जिले के एक B.A.-B.Ed. महाविद्यालय की 60 छात्राओं को दो समूहों में विभक्त किया गया। नियंत्रित समूह को परंपरागत शिक्षण विधि से तथा प्रायोगिक समूह को मिश्रित अधिगम पैकेज से शिक्षण दिया गया। दोनों समूहों पर पूर्व-परीक्षण एवं पश्च-परीक्षण किए गए। इसके परिणामों से स्पष्ट हुआ कि पूर्व-परीक्षण में दोनों समूहों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं था, जिससे वे प्रारंभिक स्तर पर समान पाए गए। पश्च-परीक्षण के आधार पर परंपरागत शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि परंपरागत शिक्षण विधि आज भी उपयोगी है, परंतु मिश्रित शिक्षण पद्धतियों के साथ इसका समन्वित उपयोग अधिक प्रभावी हो सकता है। यह अध्ययन शिक्षक-शिक्षा संस्थानों के लिए उपयोगी तथा भविष्य के तुलनात्मक अध्ययनों के लिए आधार प्रदान करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 19-06-2026
- **Accepted:** 26-07-2026
- **Published:** 28-07-2026
- **IJCRM:** 5(4); 2026: 497-503
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

जैन ही, मेनारिया ह. कु, शिक्षण में परंपरागत विधि की प्रभावशीलता एक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):497-503.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: परंपरागत विधि, शैक्षिक नवाचार, प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षा, समग्र एवं लचीला शिक्षण, कौशल उन्मुख दृष्टिकोण

© 2026 हीना जैन, डॉ. हरीश कुमार मेनारिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाने के उद्देश्य से हम नित्य नवीन साधनों या उपकरणों का प्रयोग कर रहे हैं। जिससे हमारी शिक्षा प्रणाली दिन प्रतिदिन समुन्नत हो रही है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से शिक्षा के क्षेत्र में नए विचार, नए कार्यक्रम, नयी विधियो तथा नवीन साधनों का प्रयोग करना ही शैक्षिक नवाचार के अंतर्गत आता है। वर्तमान समय में जो शिक्षा प्रदान की जा रही है उसे बैंकिंग मॉडल के नाम से जाना जाता है। शिक्षा के बैंकिंग अवधारणा में, ज्ञान उन लोगों द्वारा दिया जाने वाला उपहार है जो खुद को ज्ञानी मानते हैं। शिक्षक अपने छात्रों के सामने खुद को उनके समक्ष विपरीत के रूप में प्रस्तुत करते है। इस प्रणाली में शिक्षक ज्ञान मीमांसा के अधिकारी होते हैं, छात्रों के पहले से मौजूद ज्ञान को अनदेखा किया जाता है । यह मॉडल शिक्षा को ज्ञान के एक विशिष्ट निकाय के रूप में देखता है जो शिक्षक से छात्र तक सम्प्रेषित होता है। यह अवधारणा शिक्षण-केंद्रित सीखने पर जोर देता है जहाँ छात्र जानकारी के निष्क्रिय अवशोषक होते हैं और सीखने का उद्देश्य तथ्यों को याद रखना होता है।

डॉ डी. एस. कोठारी के अनुसार,'' वर्तमान में भारत के भाग्य का निर्माण उनकी कक्षाओं में हो रहा है।'' विद्यालय शैक्षिक उत्पादन की एक इकाई है जिसमें प्रमुख घटक शिक्षक, छात्र, प्रबंधन एवं भौतिक साधन है। इसमें शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक राष्ट्र का निर्माता एवं कर्णधार होता है। शिक्षक का महत्वपूर्ण कार्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को गढ़ना एवं उन्हें प्रतिभावान बनाना हैं ताकि वे देश को उन्नति के पथ पर अग्रसित करे सके। शिक्षक के बारे में 1952 के आयोग में जो कमियां अनुभव कि वे कुछ इस तरह से थी - ''कोई भी विधि हो, वह छात्रों और शिक्षण के बीच परस्पर अंत क्रिया के आत्मिक संबंध बनाती हैं। वह उनके दिमाग पर असर नहीं करती, बल्कि उनके काम करने के ढंग और निर्णय पर, उनकी प्रतिभा भावनात्मक संगठन, अभिवृत्तियाँ और जीवन मूल्यों पर भी असर डालती है, हमारी विद्यालयी शिक्षा में ऐसा कहीं कुछ घटित होता दिखाई नहीं देता है। नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षण स्थितियों में सुधार के स्थान पर सर्वत्र ही सीखने की स्थितियो में उत्तरोत्तर विकास की बात पर महत्व दिया गया है। नई शिक्षा नीति कई बड़े बदलाव के तहत अधिक से अधिक संख्या में छात्रों को व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करना और आई आई टी सहित संस्थाओं को बहुविषयक बनाना शामिल है।

इस नीति का उद्देश्य भारत को ''वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनना है।'' नई शिक्षा नीति को जन-जीवन की यथार्थताओं पर वास्तविक आवश्यकताओं पर आधारित किए जाने का प्रयास किया गया है। ज्ञान- विज्ञान के अभूतपूर्व विस्फोट, जनसंख्या प्रसार की असमान वृद्धि व जनसंचार एवं सूचना माध्यमों सहित जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी क्रांति में विश्व के सभी देशों को निसंदेह बहुत गहराई से उद्वेलित किया गया है। संपूर्ण मानव जीवन का भविष्य चुनौतियों से भरा प्रतीत होने लगा है और शिक्षा इस नये परिवेश की परिवर्तित समस्याओं से मूँह नहीं मोड सकती हैं। इसी क्रम में अध्ययन-अध्यापन पद्धतियों के नये विकल्प खोजने भी आवश्यक हो गए हैं।

प्रभावी रूप से सीखने की प्रक्रिया में अनेक घटकों की आवश्यकता हुआ करती है, जैसे-अनुभव, अंतर्दृष्टि नियमों का सामान्यीकरण व उनकी दृष्टि वास्तविक जीवन में उन नियमों की प्रयुक्ति एवं संपूर्ण परिवेश का व्यापक परिदृश्य निर्माण किया जा सकता है।

पिछले कुछ वर्षों से पूरे विश्व मे एक महामारी ने मानव जाति को प्रभावित किया हैं जिसे कोविड-19 कहा जाता है इस बीमारी ने देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया जिसमें सबसे ज्यादा प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर पड़ा। कोविड महामारी का सबसे गहरा प्रभाव देश की शिक्षा व्यवस्था के संचालन को लेकर दिख रहा था, जो मानव संसाधन के निर्माण के साथ भारत की सामर्थ्य से भी जुड़ा हुआ है। महामारी के चलते स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से तात्कालिक कदमों के रूप मे शैक्षिक संस्थानों को प्रत्यक्ष भौतिक संचालन से मना कर दिया गया,फिर स्कूल, कॉलेज व महाविद्यालय में कक्षा की पढ़ाई और परीक्षाएं जहां संभव हो आभासी (वर्चुअल) माध्यम से शुरू की गई इसी के चलते शिक्षा महाविद्यालय जैसे बी.एड व एम.एड़ आदि में मिश्रित शिक्षा प्रणाली ¼Blended learning) की शुरुआत की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) देश के भौतिक शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। समग्र और लचीली शिक्षण पद्धति पर जोर देने के साथ ही NEP-2020 दूरी को दूर करने पहुंच सुनिश्चित करने और सीखने के अनुभवों की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी सक्षम शिक्षा के महत्व को मान्यता देती है इस नीति में जिन प्रमुख पहलुओं पर जोर दिया गया है उनमें से एक मिश्रित अधिगम पद्धतियों को अपनाना है। मिश्रित शिक्षा की प्रासंगिकता भारत में शिक्षा में नव परिवर्तन के लिए ¼NEP&2020½ के दृष्टिकोण के साथ सहजता से मेल खाती है। मिश्रित अधिगम जो पारंपरिक कक्षा निर्देश को ऑनलाइन तत्वों के साथ जोड़ती है तथा बहुविषयक और कौशल-उन्मुख दृष्टिकोण के लिए NEP की अनुशंसाओं को संबोधित करती हैं। मिश्रित अधिगम ¼Blended learning) पारंपरिक कक्षा शिक्षण को डिजिटल उपकरणों, मोबाइल ऐप, ई-कंटेंट, वर्चुअल क्लास (जैसे यू-ट्यूब, एज्यूकेशनल चैनल्स, कोसेरा), लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम ¼LMS½ तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ¼AI½ मशीन लर्निंग, डिजिटल लाईब्रेरीज आधारित शिक्षण संसाधनों के साथ जोड़ता है। इससे विद्यार्थियों को व्यक्तिगत गति से सीखने, शिक्षकों से ऑनलाइन मार्गदर्शन प्राप्त करने, डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने तथा स्व-निर्देशित अधिगम को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार तकनीक शिक्षा को अधिक सुगम, रोचक, प्रभावी और कौशल-उन्मुख बनाती है तथा NEP&2020 के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा डिजिटल उपकरणों को एकत्रित करके मिश्रित शिक्षण पद्धति व्यक्तिगत शिक्षक मार्ग प्रदान कर सकता है, सोच को बढ़ावा दे सकता है और स्व निर्देशित सीखने को प्रोत्साहित कर सकता है।

मिश्रित अधिगम में सीखने और सीखाने के तरीकों में बदलाव लाया जा सकता है। व्यक्तिगत और डिजिटल शिक्षण दोनों की शक्तियों को एकत्रित करके मिश्रित अधिगम एक लचीला और व्यक्तिकृत अनुभव प्रदान करता है जो सीखने की विधि विविध शैलियों और गतिविधियों को पूरा करता है। मिश्रित अधिगम प्रणाली पारंपरिक कक्षा परिवेश की सीमाओं को भी संबोधित करती है। अन्वेषण साहित्य में ब्लैडेड शिक्षा को प्रौद्योगिकी समर्थक विद्या, वेबवर्धित शिक्षा और मिश्रित प्रणाली शिक्षा भी कहा जाता है। ब्लैडेड शिक्षा का विचार बहुत सालों से है लेकिन इसका संकल्प 21वीं सदी की शुरुआत में ज्यादा प्रचलित हुआ हैं। ब्लैडेड शिक्षा की सही परिभाषा सन् 2006 में वॉक तथा

© 2026 हीना जैन, डॉ. हरीश कुमार मेनारिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ग्राहम के द्वारा लिखित पुस्तिका में पहली बार हुआ। इंटरनेट व डिजिटल आधारित शिक्षा और कक्षा में पढ़ाए गए विद्या के मिश्रित शिक्षा कार्यक्रम को ब्लैडेड कक्षा कहा जाता है।

मिश्रित शिक्षा प्रणाली के लाभ- मिश्रित शिक्षा प्रणाली के लाभ निम्नलिखित हैं-

1. **शिक्षण -अधिगम का लचीलापन** - छात्र समय के बारे में सोचे बिना वर्चुअल पाठ का हिस्सा बन सकते हैं।कक्षा समाप्त होने के बाद छात्र पाठ तक पहुंच सकते हैं ।
2. **व्यक्तिगत संचार**- ई-लर्निंग के लिए इस्तेमाल किए जाने वाला लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम या शैक्षिक ई आर पी टूल शिक्षक छात्र सहयोग के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म प्रदान करता है।
3. **अधिक आकर्षक** - ऑनलाइन शिक्षण सामग्री के इंटरएक्टिव गतिविधियों के माध्यम से सीखने को अधिक रोचक एवं आकर्षक बनाया जा सकता है।
4. **प्रौद्योगिकी का उपयोग** - छात्रों को आधुनिक तकनीक और उपकरणों का उपयोग करने का अनुभव मिलता है।

मिश्रित शिक्षा प्रणाली के प्रकार-

1. **फ्लिप्ड क्लासरूम**- विद्यार्थी पहले ऑनलाइन संसाधनों से पढ़ाई करते हैं और कक्षा में शिक्षक के साथ चर्चा या अभ्यास करते हैं।
2. **रोटेशन मॉडल**- विद्यार्थी कक्षा में अलग-अलग शिक्षण पद्धतियों के बीच घूमते रहते हैं जैसे- ऑनलाइन सीखना है, समूह चर्चा और व्यक्तिगत मार्गदर्शन।
3. **फ्लेक्स मॉडल**- विद्यार्थी को मुख्य रूप से ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई करने की स्वतंत्रता होती है लेकिन शिक्षक मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध होते हैं।
4. **एनरिच्ड वर्चुअल मॉडल**- इसमें विद्यार्थी अधिकतर ऑनलाइन अध्ययन करते हैं लेकिन कभी-कभी कक्षा में शिक्षक से मार्गदर्शन लेते हैं। वर्तमान समय में तीव्रता से बढ़ती हुई डिजिटल शिक्षा की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए एक पारिस्थितिक मित्र पीढ़ी के निर्माण के लिए बी.ए.-बी.एड. महाविद्यालय में मिश्रित शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के बारे में अध्ययन शोधकर्ता का इस दिशा में एक प्रयास है।

शोध परिकल्पना

1. नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षण के प्राप्तांको के मध्यमान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण के प्राप्तांको के मध्यमान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रायोगिक अनुसंधान एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जिसका उपयोग विभिन्न चरों के बीच कारण-प्रभाव संबंधों का पता लगाने के लिए किया जाता है। शिक्षा में, इस प्रकार का अनुसंधान ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने में सहायक होता है जैसेः क्या कोई विशेष शिक्षण विधि विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सुधार करती है? क्या कक्षा के वातावरण में परिवर्तन से विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ सकती है? इन प्रश्नों का उत्तर एक या अधिक स्वतंत्र चरों (परिवर्तन या नियंत्रण किए जाने वाले कारक) में हेरफेर करके और आश्रित चरों (परिणाम या परिणाम) पर उनके प्रभावों को मापकर दिया जा सकता है ।

प्रायोगिक अनुसंधान की कुंजी चरों का नियंत्रण है। चरों को नियंत्रित किए बिना, यह निर्धारित करना कठिन होगा कि प्रेक्षित प्रभाव स्वतंत्र चर के कारण है या अन्य कारकों के कारण जो परिणाम को प्रभावित कर सकते हैं। इस अध्ययन हेतु शोधकर्ती द्वारा अपने शोध कार्य हेतु "प्रायोगिक विधि"का प्रयोग किया जाएगा। प्रायोगिक कार्य को निम्न चरण में पूरा किया गया।

शोध उपकरण

इस अध्याय में शिक्षण अधिगम पैकेज के अंतर्गत 30 पाठ योजना बनाकर प्री टेस्ट और पोस्ट टेस्ट शोधार्थी एक्सपर्ट से जांच कर स्व निर्मित पाठ योजना का निर्माण किया गया। जिसका समय प्रति पाठ योजना में 40 मिनट का है।

1. 30 सामान्य पाठ योजना
2. पूर्व परीक्षण
3. पश्च परीक्षण

न्यादर्श - इस न्यायाधीश में बीए बी एड महाविद्यालय उदयपुर की छात्राओं को सम्मिलित कर दो समूह में विभक्त किया गया। शोधकर्ती द्वारा अपने शोध कार्य को करने के लिए निम्न न्यादर्श का चयन किया जाएगा।

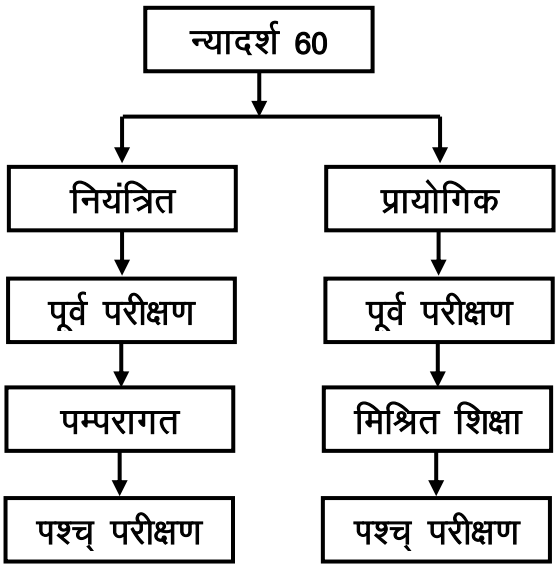

अध्ययन का परिसीमन - शोध परिसीमन के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा उदयपुर जिले का चयन किया गया।

1. क्षेत्र - प्रस्तुत अध्ययन उदयपुर जिले तक सीमित रखा जाएगा।
2. महाविद्यालय - न्यादर्श के अंतर्गत उदयपुर शहर के एक महाविद्यालय का चयन किया गया।
3. स्तर- प्रस्तुत शोध में B.A. B.Ed महाविद्यालय का चयन किया गया।
4. लिंगवार - शोध अध्ययन हेतु छात्राओं का चयन किया गया।
5. अवधि - प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रयोगिक समूह को अधिगम गतिविधियां 30 दिन तक प्रयोगिक उपचार दिया गया।

दत्त विश्लेषण एवं सांख्यिकी प्रविधियां

© 2026 हीना जैन, डॉ. हरीश कुमार मेनारिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

किसी भी शोध कार्य के लिए प्रदतों के संकलन तथा उनके व्यवस्थित विश्लेषण के लिए जिस प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है उसे सांख्यिकी प्रविधि कहते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थी संभावित रूप से निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग करेगी –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. "टी परीक्षण"

शिक्षण में परंपरागत विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन

चार्ट-1

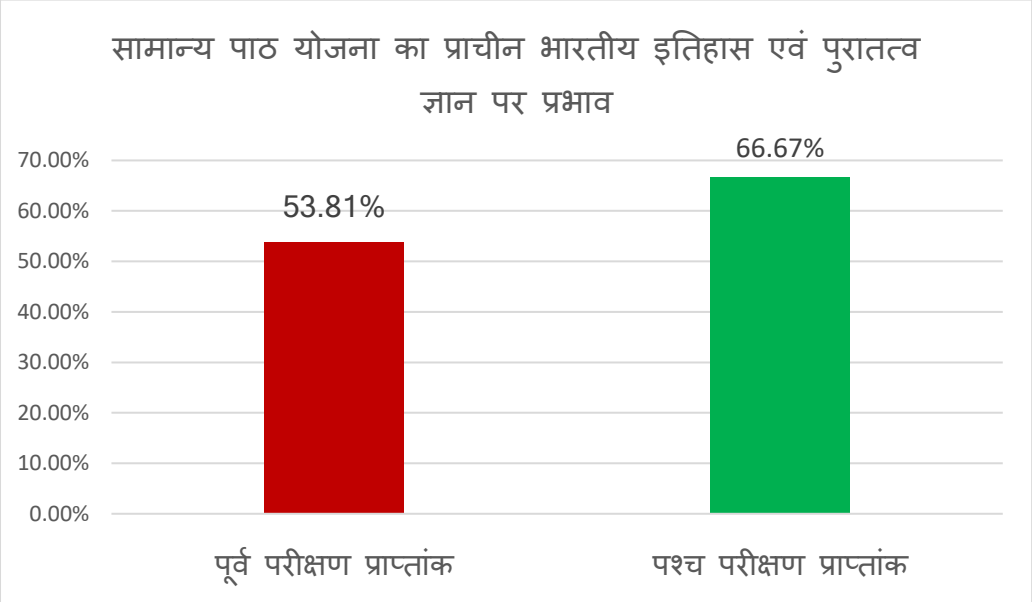

नियंत्रित समूह के चयनित 30 विद्यार्थियों का प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व से संबंधित ज्ञान का आंकलन किया गया। यह आकलन प्रश्न संख्या 8, 28 और 37 के आधार पर किया गया जिनके अंक क्रमशः एक, एक और पांच निर्धारित है। इस आधार पर चयनित सभी विद्यार्थियों द्वारा कुल सात में से 3.77 अंक अर्जित किए गए। 30 दिन तक इन विद्यार्थियों को सामान्य पाठ योजना का प्रयोग करते हुए पढ़ाया। तदुपरांत उनके प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व से संबंधित ज्ञान का पुनः आंकलन किया गया। शोध दर्शाता है कि इस के पश्चात इन विद्यार्थियों के प्रदर्शन में कुछ निखार आया एवं उनके द्वारा अर्जित औसत अंक 4.67 रहे। इस प्रकार 0.90 अंक की वृद्धि दर्ज की गई। यदि प्रतिशत में देखा जाए तो सामान्य पाठ योजना के पूर्व चयनित विद्यार्थियों का प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व ज्ञान का स्तर 53.81% था जो की सामान्य पाठ योजना द्वारा अध्यापन के उपरांत बढ़कर 66.67% हो गया। सामान्य शिक्षण रीति के द्वारा विद्यार्थियों के भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व ज्ञान में 12.86% की वृद्धि हुई।

चार्ट

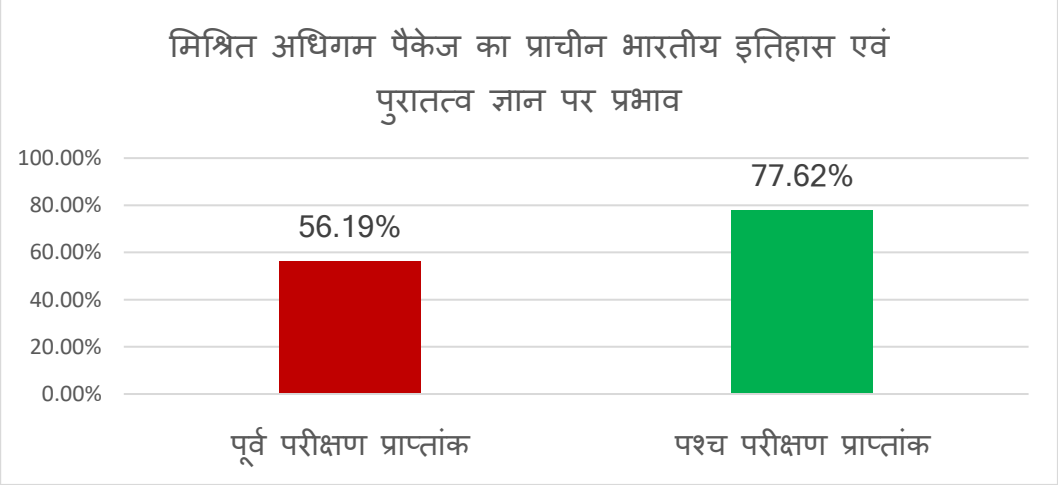

© 2026 हीना जैन, डॉ. हरीश कुमार मेनारिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रायोगिक समूह के चयनित 30 विद्यार्थियों का प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व से संबंधित ज्ञान का आंकलन किया गया। यह आकलन प्रश्न संख्या 8, 28 और 37 के आधार पर किया गया जिनके अंक क्रमशः एक, एक और पांच निर्धारित है। इस आधार पर चयनित सभी विद्यार्थियों द्वारा कुल सात में से 3.93 अंक अर्जित किए गए। 30 दिन तक इन विद्यार्थियों को मिश्रित अधिगम पैकेज का प्रयोग करते हुए पढ़ाया। तदुपरांत उनके प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व से संबंधित ज्ञान का पुनः आंकलन किया गया। शोध दर्शाता है कि इस के पश्चात इन विद्यार्थियों के प्रदर्शन में बहुत निखार आया एवं उनके द्वारा अर्जित औसत अंक 5.43 रहे। इस प्रकार 1.50 अंक की वृद्धि दर्ज की गई। यदि प्रतिशत में देखा जाए तो मिश्रित अधिगम पैकेज के पूर्व चयनित विद्यार्थियों का प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व ज्ञान का स्तर 56.19% था जो की मिश्रित अधिगम पैकेज द्वारा अध्यापन के उपरांत बढ़कर 77.62% हो गया। मिश्रित अधिगम पैकेज के द्वारा विद्यार्थियों के भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व ज्ञान में 21.43% की वृद्धि हुई।

राजस्थान का इतिहास एवं विरासत ज्ञान

चार्ट-3

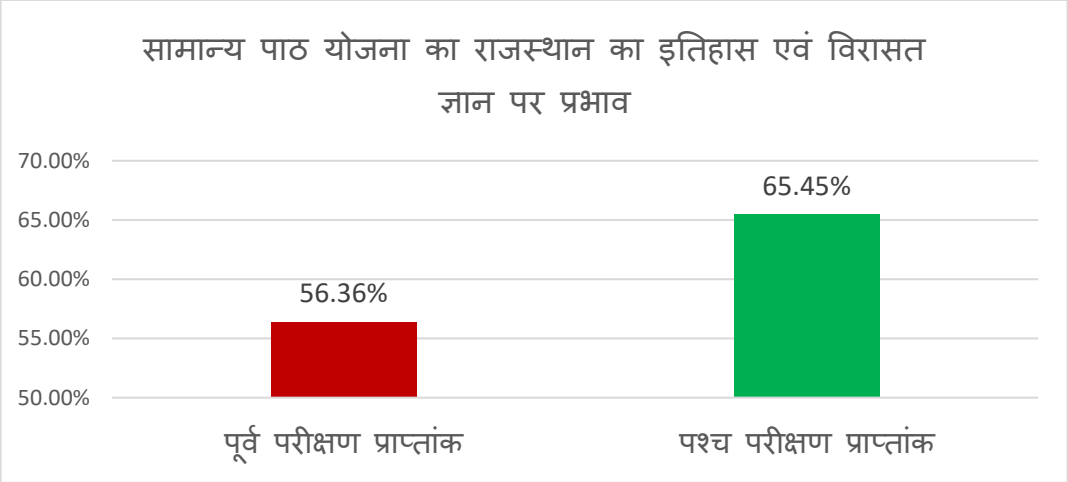

नियंत्रित समूह के चयनित 30 विद्यार्थियों का राजस्थान का इतिहास एवं विरासत ज्ञान का आंकलन किया गया। यह आकलन प्रश्न संख्या 1 से 7, 17, 26, 29, 30, 33(अ), 33(ब), 33(र), 34, 35 (क), (ग) और 36 के आधार पर किया गया जिनके कुल निर्धारित अंक 22 है। इस आधार पर चयनित सभी विद्यार्थियों द्वारा कुल 22 में से 12.40 अंक अर्जित किए गए। 30 दिन तक इन विद्यार्थियों को सामान्य पाठ योजना का प्रयोग करते हुए पढ़ाया। तदुपरांत उनके राजस्थान का इतिहास एवं विरासत से संबंधित ज्ञान का पुनः आंकलन किया गया। शोध दर्शाता है कि इस के पश्चात इन विद्यार्थियों के प्रदर्शन में कुछ निखार आया एवं उनके द्वारा अर्जित औसत अंक 14.40 रहे। इस प्रकार 2.00 अंक की वृद्धि दर्ज की गई। यदि प्रतिशत में देखा जाए तो सामान्य पाठ योजना के पूर्व चयनित विद्यार्थियों का राजस्थान का इतिहास एवं विरासत ज्ञान का स्तर 56.36% था जो की सामान्य पाठ योजना द्वारा अध्यापन के उपरांत बढ़कर 65.45% हो गया। सामान्य शिक्षण रीति के द्वारा विद्यार्थियों के राजस्थान का इतिहास एवं विरासत ज्ञान में 9.09% की वृद्धि हुई।

चार्ट-4

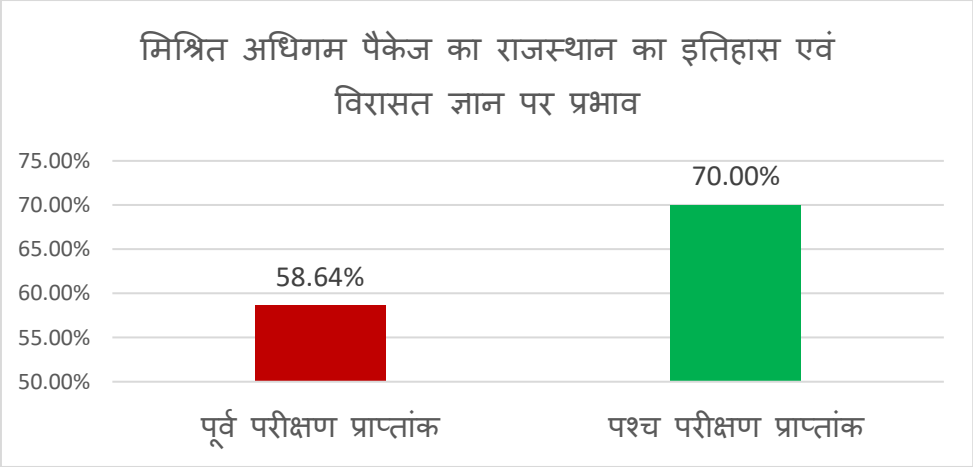

© 2026 हीना जैन, डॉ. हरीश कुमार मेनारिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रायोगिक समूह के चयनित 30 विद्यार्थियों का राजस्थान का इतिहास एवं विरासत ज्ञान का आंकलन किया गया। यह आकलन प्रश्न संख्या 1 से 7, 17, 26, 29, 30, 33(अ), 33(ब), 33(र), 34, 35 (क), (ग) और 36 के आधार पर किया गया जिनके कुल निर्धारित अंक 22 है। इस आधार पर चयनित सभी विद्यार्थियों द्वारा कुल 22 में से 12.90 अंक अर्जित किए गए। 30 दिन तक इन विद्यार्थियों को मिश्रित अधिगम पैकेज का प्रयोग करते हुए पढ़ाया। तदुपरांत उनके राजस्थान का इतिहास एवं विरासत से संबंधित ज्ञान का पुनः आंकलन किया गया। शोध दर्शाता है कि इस के पश्चात इन विद्यार्थियों के प्रदर्शन में कुछ निखार आया एवं उनके द्वारा अर्जित औसत अंक 12.90 रहे। इस प्रकार 2.50 अंक की वृद्धि दर्ज की गई। यदि प्रतिशत में देखा जाए तो मिश्रित अधिगम पैकेज के पूर्व चयनित विद्यार्थियों का राजस्थान का इतिहास एवं विरासत ज्ञान का स्तर 58.64% था जो की मिश्रित अधिगम पैकेज द्वारा अध्यापन के उपरांत बढ़कर 70.00% हो गया। मिश्रित अधिगम पैकेज के द्वारा विद्यार्थियों के राजस्थान का इतिहास एवं विरासत ज्ञान में 11.36% की वृद्धि हुई।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास ज्ञान

चार्ट-5

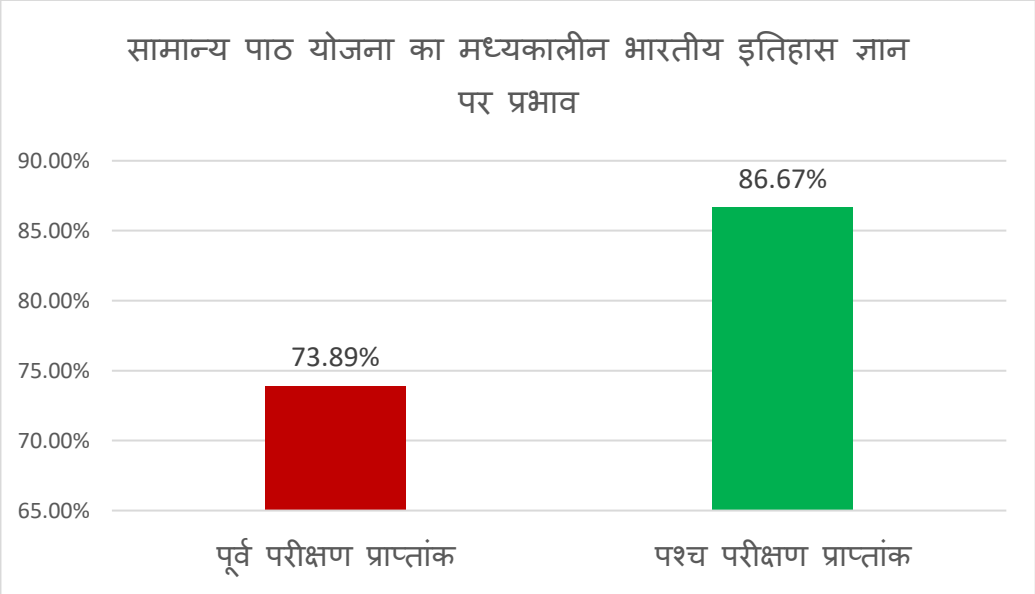

नियंत्रित समूह के चयनित 30 विद्यार्थियों का मध्यकालीन भारतीय इतिहास ज्ञान का आंकलन किया गया। यह आकलन प्रश्न संख्या 9, 10, 12, 13 और 33 (स), 35 (ख) के आधार पर किया गया जिनके कुल अंक 6 निर्धारित है। इस आधार पर चयनित सभी विद्यार्थियों द्वारा कुल 6 में से 4.43 अंक अर्जित किए गए। 30 दिन तक इन विद्यार्थियों को सामान्य पाठ योजना का प्रयोग करते हुए पढ़ाया। तदुपरांत उनके मध्यकालीन भारतीय इतिहास ज्ञान का पुनः आंकलन किया गया। शोध दर्शाता है कि इस के पश्चात इन विद्यार्थियों के प्रदर्शन में कुछ निखार आया एवं उनके द्वारा अर्जित औसत अंक 5.20 रहे। इस प्रकार 0.77 अंक की वृद्धि दर्ज की गई। यदि प्रतिशत में देखा जाए तो सामान्य पाठ योजना के पूर्व चयनित विद्यार्थियों का मध्यकालीन भारतीय इतिहास ज्ञान का स्तर 73.89% था जो की सामान्य पाठ योजना द्वारा अध्यापन के उपरांत बढ़कर 86.67% हो गया। सामान्य शिक्षण रीति के द्वारा विद्यार्थियों के मध्यकालीन भारतीय इतिहास ज्ञान में 12.87% की वृद्धि हुई।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य में उद्देश्य आधारित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए - उद्देश्य के अनुसार बीए बी एड महाविद्यालय में इतिहास शिक्षण में 10 महत्वपूर्ण घटकों के आधार पर विद्यार्थियों के द्वारा सामान्य पाठ योजना को नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्चिम परीक्षण का मध्यमान एवं मानक विचलन विचलन दर्शाता है कि दोनों समूह के बीच 0.01 अंक का अंतर है जो की सारणी मान 1.96 से बहुत ही काम है। अतः कहा जा सकता है कि नियंत्रित तथा प्रयोगात्मक दोनों समूह के विद्यार्थियों के इतिहास के विभिन्न घटकों की प्रदर्शन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। वहीं विद्यार्थियों का सामान्य पाठ योजना पूर्व समय के इतिहास में औसत अंक 36.27 है एवं मिश्रित अधिगम पैकेज पूर्व समेकित इतिहास में औसत अंक 36.23 अंक है। इस प्रकार दोनों समूह के बीच मात्र 0.04 अंक है जो की तालिका मान 1.96 से बहुत ही कम है। अतः कहा जा सकता है कि नियंत्रित तथा प्रयोगात्मक दोनों समूह के विद्यार्थियों के समेकित इतिहास प्रदर्शन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः पहली परिकल्पना को पूर्णतया स्वीकार किया गया है।

संदर्भ सूची

1. अजेन आई. नियोजित व्यवहार का सिद्धांत। संगठनात्मक व्यवहार एवं मानव निर्णय प्रक्रियाएँ। 1991;50(2):179-211।

© 2026 हीना जैन, डॉ. हरीश कुमार मेनारिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. अक्योल जेड, गैरीसन डीआर. ऑनलाइन एवं मिश्रित अधिगम वातावरण में संज्ञानात्मक उपस्थिति को समझना। इंटरनेट एवं उच्च शिक्षा। 2011;14(4):233-250।
3. अल-काहतानी एए, हिगिंस एसई. उच्च शिक्षा में छात्रों की उपलब्धि पर पारंपरिक, मिश्रित एवं ई-शिक्षण का प्रभाव। कम्प्यूटर सहायता प्राप्त अधिगम पत्रिका। 2013;29(3):220-234।
4. अलावी एम, गैलप आरबी. सहयोगात्मक शिक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग। एमआईएस क्वार्टरली। 2003;27(1):159-173।
5. एंडरसन टी, संपादक. ऑनलाइन अधिगम का सिद्धांत एवं व्यवहार। द्वितीय संस्करण। अथाबास्का: अथाबास्का यूनिवर्सिटी प्रेस; 2008।
6. एंडरसन टी, ड्रोन जे. दूरस्थ शिक्षा शिक्षाशास्त्र की तीन पीढ़ियाँ। अंतरराष्ट्रीय मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम समीक्षा। 2011;12(3):80-97।
7. अस्तिन एडब्ल्यू. छात्र सहभागिता का सिद्धांत: उच्च शिक्षा के विकास हेतु दृष्टिकोण। कॉलेज छात्र विकास पत्रिका। 1999;40(5):518-529।
8. ऑसबेल डीपी. शैक्षिक मनोविज्ञान: एक संज्ञानात्मक दृष्टिकोण। न्यूयॉर्क: होल्ट, राइनहार्ट एवं विंस्टन; 1968।
9. बैडले एडी, हिच जीजे. कार्यशील स्मृति। में: बोवर जीएच, संपादक। अधिगम एवं प्रेरणा का मनोविज्ञान। खंड 8। न्यूयॉर्क: एकेडमिक प्रेस; 1974. पृ. 47-89।
10. बंडुरा ए. आत्म-प्रभावकारिता: नियंत्रण के अभ्यास का सिद्धांत। न्यूयॉर्क: डब्ल्यू.एच. फ्रीमैन एंड कंपनी; 1997.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

हीना जैन जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर के शिक्षा विभाग में शोधार्थी हैं। उनकी शोध रुचियों में शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, शैक्षिक अनुसंधान तथा समकालीन शिक्षा संबंधी विषय शामिल हैं। वे शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शोध एवं अकादमिक लेखन के प्रति समर्पित हैं।

डॉ. हरीश कुमार मेनारिया जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर के शिक्षा विभाग में सहआचार्य एवं शोध निर्देशक हैं। उन्हें शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास, शिक्षण पद्धतियों तथा शिक्षा प्रशासन के क्षेत्र में व्यापक अनुभव प्राप्त है। वे शोध, अध्यापन और अकादमिक मार्गदर्शन में सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

© 2026 हीना जैन, डॉ. हरीश कुमार मेनारिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/